# क्या हम कुछ भी विश्वास कर सकते है?

## या किसी भी अराधनालय स्थल को जा सकते है?

लेखक: डेन्निस गिल्लेट (Dennis Gillett)

आप को यह जानकर बहुत ही विचित्र सा प्रतीत होगां, कि विश्व में मार्त बाईबिल ही एक ऐसी पुस्तक है, जो लगभग विश्व के समस्त भाषाओं में लिखी जा चुकी है, परन्तु बाईबिल पुरे विश्व में एक ही है, कहीं भी पूरे विश्व में बाईबिल के भाव व अर्थ में कोई अन्तर नहीं आया, चाहे एशिया हो या युरोप, चाहे प्राचीन अग्रेंजी हो या वर्तमान, सब का अर्थ एक ही है, और बाईबिल एक ही है। बाईबिल को विभिन्न भाषाओं में अनुवाद करने के लिए हजारों बुद्धिवेताओं ने अपने-अपने कलमों का प्रयोग किया, परन्तु कोई भी बाईबिल का बुद्धिवेता यह नहीं कह सकता कि बाईबिल के भाव या अर्थ में कोई फर्क, अथवा हम इसको यह भी कह सकते है कि बाईबिल ही मात्र विश्व में ऐसी पुस्तक है, जो बुद्धिवेताओं से सहमती रखती है।

हाँ यह कुछ हद तक सम्भव सा प्रतीत होता दिखता है कि, बहुत से धर्म आपस में और दूसरे धर्मो से कुछ हद तक समानता रखते है, परन्तु यह सरासर गलत बात है कि सभी धर्मो के विचार एक ही हैं, और मात्र नाम अलग-अलग, परन्तु वास्तविक्ता तो यह है कि सभी धर्म अलग-अलग है, और सभी धर्मो के भाव व विचार भी अलग-अलग है, और एक सब से बड़ी अचम्भित वास्तविक्ता तो यह है कि कभी-कभी आप ऐसा भी पायेगें कि एक ही धर्म में दो गुट पायेगें, क्योंकि एक गुट के लोग दूसरे गुट के लोगों से सहमत नहीं है, जब कि दोनो गुट के धर्म एक ही, परन्तु सभी लोग एक विचार से सहमत नहीं है, और आप ऐसा ही बाईबिल और यीशु में विश्वास करने वालो में पायेगें। हालाँकि यह शत प्रतिशत सत्य है कि बाईबिल मात्र एक ही है, परन्तु बाईबिल में विश्वास करने वालों में बहुत ही भिन्नता है, और यह अजीब सा दिखता है, और यह बात दिमाग में नहीं आती कि, सभी बाईबिल में विश्वास करने वाले यह मानते है, कि बाईबिल मात्र एक ही पुस्तक है, बाईबिल में कोई फर्क नहीं है, पर बाईबिल में विश्वास करने वाले, एक दूसरे से सहमत क्यों नहीं है?

# अन्तर का आरम्भ

## The development of differences

जब बाईबिल में विश्वास करने वालों ने रोम आधिपत्य के चर्चो से अलग होने का निर्णय लिया तो बाईबिल के अलग्वादीयों को यह विश्वास था कि, अब हम लोग स्वंय बाईबिल पड़ सकेगें और बाईबिल की सच्चाईयों पर चलकर, हम सब मसीही लोग एक गुट हों जायेगें।

परन्तु आश्चर्य की बात तो यह हुई कि यह स्लगावादी बाईबिल में विश्वास रखने वाले आपस में एक न होकर, एक ही विचारधारा रखते हुऐ भी, आपस में बहुत मतभेद कर लिए, जब कि अलगावादी के संस्थापक की यह ईच्छा नहीं थी, बहुतेरे, अनगिनत चर्च आप को मिलेगें, और सभी चर्चो के संस्थापक अपने आप को बाईबिल में विश्वास करने वाके बोलेते हैं, और सभी चर्च वाले यह बोलते है कि, हमारा ही चर्च सत्य पर चलता है, और हमारे ही लोग, और हमारा ही चर्च केवल सही चर्च है, प्रश्न यह उत्पन्न होता है कि इतना सारा मतभेद कहाँ से उत्पन्न हुआ, वास्तविकता तो यह है, अलगावादि के संस्थापक का कुछ विचार, सत्य से बहुत परे था, अर्तमान शताब्दी में इतने सारे अलग-अलग विचार धाराऐं है कि, जिसकी कल्पना भी नहीं की जा सकती है, यह अलगाववादि इस लिए शुरी हुआ कि, सब अपने को स्वतंत्र गुट बन कर रहना चाहते है, और बहुत से चर्च इस आधार पर, स्थापित हुए कि, उनके संस्थापक ने यह कहा कि मुझे परमेश्वर की ओर से एक विशेष वचन प्राप्र हुआ है, और मुझे परमेश्वर ने ऐसा-ऐसा करने को कहा है, परन्तु यह सत्य नहीं हो सकता, क्योंकि परमेश्वर का सम्पूर्ण वचन मात्र बाईबिल ही है, और परमेश्वर का सम्पूर्ण वचन बाईबिल में अब लिखित रूप से है।

परमेश्वर का जो भी वचन है, और यीशु ने जो कुछ भी कहा वोह सब बाईबिल में लिखा हुआ, अब यह देखना है कि, यीशु ने परमेश्वर के वचन के बारे में क्या कहा, हम यहाँ बाईबिल में एक स्थान पर यह कहा हुआ पाते है कि "तुम पवित्र शास्त्र में ढ़ढते हो क्योंकि समखते हो कि उस में अन्नत जीवन तुम्हे मिलता है, और यह वही है, जो मेरी गवाही देता है।" (यूहन्ना 5:39-40) यहाँ पर यीशु इस बात से गुस्सा नहीं करता कि वे परमेश्वर के वचन को पढ़रे है, परन्तु यहाँ पर यीशु इस लिए गुस्सा करता कि वे परमेश्वर के बताएँ हुऐ, रास्ते पर नहीं चलते।

अब हम यीशु की एक और कही गई बात को देखेगें, जो हमें बाईबिल में इस प्रेकार मिलती है। "परन्तु मरे हुओं के जी उठने के विषय में क्या तुमने यह वचन नहीं पढ़ा जो

परमेश्वर ने तुम से कहा, कि मैं इब्राहीम का परमेश्वर, और इसहाक का परमेश्वर और याकूब का परमेश्वर हूँ। वह तो मरे हुओं का नहीं जीवन का परमेश्वर है।" (मत्ती 22:31-32) यीशु ने फिर एक स्थान पर यह कहा कि, “तुम पवित्र शास्त्र और परमेश्वर की सामर्थ नहीं जानते, इस कारण से तुम भुल में पड़ गये हो।" (मत्ती 22:29) तो यीशु की इन उपरोक्त बातों से पता चलता है, कि परमेश्वर के वचन का कितना महत्व है और सामर्थ है, अगर यीशु के बताऐ हुए रास्ते पर, और परमेश्वर के वचन के अनुसार सभी बाईबिल के विश्वासी चलें तो कोई विचार में मत भेद न रहेगां।

## परित्र शास्त्र

The Holy Scriptures

पौलुस जब यीशु के शुभ समाचार के प्रचार का कार्य कर रहा था, तो उसने अपने साथ तिमुथियुस की मां यहुदी थी, पौलुस ने तिमुथियुस को दो पत्र लिखा, उसमें से उसने एक पत्र में तिमुथियुस को इस प्रकार लिखा, “और बालक पन से पवित्र शास्त्र तेरा जाना हुआ है, जो तुझे मसीह पर विश्वास करने से उद्धार प्राप्त करने के लिए बुद्धिमान बना सकता है।" पौलुस ने तिमुथियुस को ऐसा क्यों लिखा, क्योंकि पौलुस को यह मालुम था कि तिमुथियुस पवित्र शास्त्र को बचपन से ही अच्छा जानता था क्योंकि तिमुथियुस की माँ और दादी यहूदी थी, और यहुदियों को पवित्र शास्त्र का ज्ञान बचपन से ही होता है। इसलिए पौलुस ने यहुदियों को भी यीशु का शुभ समाचार सुनाया। परन्तु पौलुस ने एक स्थान पर यह कहा, जो हमें प्रेरितों के काम 17:11 में मिलता है, “ये लोग तो थिस्सलुनीकियों के यहुदियों से भले थे और उन्होंने बड़ी लालसा से वचन ग्चहण किया, और प्रति दिन पवित्र शास्त्रो में ढंढ़ते रहे कि यह बाते योंही है, कि नहीं।" हम यहाँ पर यह देखते है कि, जब लोगों ने पवित्र शास्त्र को पड़ना और सत्र की तलाश करना शुरु किया तो, पौलुस ने उन लोगों पर गुस्सा नहीं किया परन्तु पौलुस उनसे बहुत खुश हुआ कि वे सत्य की तलाश कर रहे है, एक अन्य स्थान पर पौलुस ने लिखा कि "सब बातों को परखो, जो अच्छी है उसे पकड़े रहो।" (1 थिस्सलुनिकियों 5:21)

यहाँ पर पौलुस ने उन लोगो से प्रसन्नता दिखाई, जो लोग पवित्र शास्त्र को पढ़ते और उसमें यह तलाश करते कि पौलुस जो कह रहा है, वह सत्य है, या नहीं। अभी हम और आगे यह देखेगें पौलुस पवित्र शास्त्र पढ़ने वालो के बारे में आगे और क्या कहता है, हम यह बात पौलुस की लिखा पत्रिका में पायेगें, “इसलिए सब प्रकार का बैरभाव और छल

और कपत और डाह और बदनामी को दूर करके नये जन्में हुए बच्चों की नाई निर्मल आत्मिक दूध की लालसा करो, ताकि उसके द्वारा उद्धार पाने के लिते बढ़ते जाओ।" (1 पतरस 2:1-2) और हम आगे यह पायेगें, "और विवेक भी शुद्ध रखो, इसलिये कि जिन बातों के विषय में तुम्हारी बदनामी होती है, उन के विषय में वे जो तुम्हारे मसीही अच्छे चाल चलन का अपमान करते हैं, लज्जित हों।" (1 पतरस 3:16) हम बाईबिल में से पौलुस के द्वारा ऊपर लिखे गये अनुच्छेद से यह समझ जा सकते है कि परमेश्वर का वचन, हमारे को सत्य तक पहुचाने के लिए प्रर्याप्त है, परन्तु यदि हम बाईबिल को सुचारु रूप से न पड़े, और परमेश्वर के वचन को पूर्ण रूप से न समझें तो हमको वास्तविकता से हटने, और बहकने का भी डर है, इसलिए हम लोगो को बाईबिल प्रार्थना पूर्वक और बहुत ही समझ-समझ कर पड़ना चाहिए।

## बहुत और अनेक प्रकार के मसीही अराधनालय

### Many Churches

यह बात नहीं समझ में आती कि विश्व में अनेक के विश्वास रखने वाले मसीही अराधनालय स्थल क्यों है जब कि सब के पास अपनी-अपनी भाषा में बाईबिल है, और सम्पूर्ण विश्व में बाईबिले मात्र एक है, और परमेश्वर का वचन, यीशु का शुभ समाचार एक ही, फिर मसीहियों के विचार में अनेकता क्यों? और समस्त विस्व्ह में विभिन्न विचार धराऐं वाले मसीही अराधनालय क्यों? यह बात समःमें नहीं आ रही है कि वर्तमाण समय में नये-नये प्रकार के विचार धारा वाले अराधना स्थल क्यों उत्पन्न हो रहे हैं। बाईबिल के विश्वासियों में इसना मतभेद क्यों इसका पहला कारण तो यह है कि, अधिकतर लोगों ने बाईबिल को सुचारू रूप से समझने का प्रयत्न नहीं किया, उन्होने बाईबिल की शिक्षा पर विधिवत रूप से ध्यान नहीं दिया, उन्होने कभी यह समझने का प्रयत्न नहीं किया कि बाईबिल हमको क्या सिखाती, परन्तु उन लोगों ने बाईबिल को मात्र अपन रूप में ढालने का प्रयत्न किया, उन्होने बाईबिल को उस प्रकार समझने की कोशिश किया, जिस प्रकार वोह खुद समझना चाह रहे थे, उन्होने अपनी परिवारिक रूड़ विचार को बाईबिल के विचार में सम्मिलित करने का प्रयत्न किया, उन्होने परमेश्वर को और परमेश्वर की इच्छा को कभी बाईबिल नियमानुसार समझने का कष्ट नहीं किया, परन्तु उन्होने परमेश्वर को अपने नियमानुसार, और अपनी इच्छाओं के अनुसार समझने का प्रैयत्न किया, उन्होने बाईबिल के एक या कुछ अंशो को ले लिया, जो उनको भातिं थी, और बाईबिल के उसी अंश उन लोगो ने अपने विश्वास की अधारशिला बना लिया, परन्तु

उन्होने यह कभी समझने का कष्ट नहीं किया कि सम्पूर्ण बाईबिल क्या कहती है, और सम्पूर्ण बाईबिल का भाव व अर्थ क्या है? जब हम सम्पूर्ण बाईबिल को अपने से परे रख कर पढ़ने, और बाईबिल को समझने का कष्ट करेगें तो बाईबिल हम को पूर्ण रूप से समझ में आ जायेगीं, और हमको यह भी ज्ञांत हो जायेगां कि परमेश्वर हमारे से क्या चाहता है, और परमेश्वर क्या है? परन्तु बहुत से लोग, बाईबिल के उन अनुच्छे दों को जो उनको और उनके विचारों को भातें, उसे अपना लेते है, और बाईबिल के दूसरे हिस्से को योंही छोड़ देते है, क्योंकि बाईबिल के दूसरे अनुच्छेद उनके विचारों को नहीं भातें है। एक दूसरी बाईबिल के विश्वासियों में सब से बड़ी समस्या यह है कि, बहुत से चर्च कुछ विशेष शिक्षा को, अपने चर्च के विश्वास की मुख्य विश्वास का केन्द्र मानते है, और वोह परिपूणं रूप से यह समझने का प्रयत्न नहीं करते कि समस्त बाईबिल परमेश्वर की प्रेरणां से लिखा गया है, और जैसा कि पौलुस ने बताया, पवित्र शास्त्र परमेश्वर की प्रेरनां से लिखा गया है, और उसकीहर एक बात हमारे को समझाने, सुधारने और परमेश्वर को और उसकी ईच्छा को समझने के लिए प्रर्याप्र है।

इस वर्तमान समय के मसीही अराधनालय के लोगों को यह समझना बहुत ही कठिन है कि परमेश्वर के राज्य का क्या मतलब, यीशु के पुनरुत्थान का क्या अर्थ है, यीशु और परमेश्वर का क्या अर्थ, यीशु और परमेश्वर के बीच क्या सम्बन्ध है, बपतिस्में का क्या अर्थ है। प्रभु भोज का वास्तविक अर्थ क्या है? मनुष्य की प्रकृति क्या है, और मृत्यु के बाद क्या होगां। अधिकतर मसीही अराधनालय वालो का यह विश्वास है कि मृत्यु के बाद आत्मा स्वर्ग में जाती है, परन्तु बाईबिल यह सिखाती है, मृत्यु के बाद, मौन्ष्य अज्ञांत अवस्था में सोता रहता है, और यीशु जब पुनः इस धरती पर वापिस आयेगां तो वह पुनः मुर्दो को जिन्दा करेगां, और न्याय करेगां, और इस धरती पर पुनः परमेश्वर का राज्य संथापित करेगां, जिसजी राजधानी यरुशलेम होगीं, और एक विशेष बात यह है कि बहुत से लोग यह समझते है कि, हम लोग कुछ भी विश्वास करें, इससे कोई मतलब नहीं है, परन्तु बहुत से लोग यह भुल जाते है कि, सच्चाई मात्र एक है, और सच्चाई अनेक नहीं हो सकती।

## क्या हम कुछ भी विश्वास कर सकते हैं?

Does it matter?

सब से पहले हम इसको अपने स्वंय के तर्कानुसर समझने की कोशिश करे, उदाहरण स्वरूप, समझईए किसी मरीज बिमार आदमी का आपरेशन होने वाला है, और यदि

आपरेशन करने वाला यह सोचे कि हमको आपरेशन के तरीके से कोई भी मतलब नहीं, बस आपरेशन का औजार और समान उठा ले के, आपरेशन शुरू कर दे तो बस है, तो इसका मतलब यह होगां कि, मरीज को मालुम होते ही, वह खुद ब खुद दवाखाने से डीसचार्ज से कर चला जायेगां। और यदि कोई हवाई जहाज से सफर करने वाला है, और हवाई जहाज का चालक (पाईलत) यदि यह सोचे कि हवाई जहाज के चलाने के तरूके से कोई मतलब नहीं है, बस विशेष बात क्या करना है, तो यह बात निश्चित है कि यात्री को मालुम होते ही वह उस हवाई जहाज से यात्रा को रद्ध करके, अपनी यात्रा का कोई और साधन ढुढेगां।

उपरोक्त दो उदाहरणों सो समझने से यह बात निश्चित रूप से समझ में आ जाती है कि किसी भी कार्य को करने से पहले उसे भलि भातिँ समझना बहुत जरूरी है। उसी प्रकार परमेश्वर में विश्वास और उसकी ईच्छा को समझने के लिए भी, उसे भलि भातिँ समझना बहुत अवश्यक है, परन्तु बहुत से लोग यह सोचते है कि हम कुछ भी विश्वास करे तो, बस ईतना काफी है, परन्तु यह सत्य नहीं है, सत्य तो यह है कि हमको परमेश्वर और उसकी ईच्छाओ को जानना बहुत ही आवश्यक है, परन्तु आप इस बात को स्वंय सोचे कि परमेश्वर हम आप को और सारे संसार की रचना कि, यदि हम इसके बारे में, और उसकी ईच्छाओ के बारे में, न जाने तो क्या यह अच्छा होगां, क्या परमेश्वर इससे खुश होगां लोग उसके बारे में, और उसकी ईच्छाओ के बारे में न जाने?

परन्तु यह सत्य नहीं है, सत्य तो यह है कि परमेश्वर हम लोगों से यह चाहता है कि हम लोग, उसके बारे में और उसकी ईच्छाओ के बारे में अवश्य जाने, इससे परमेश्वर प्रसन्न होता है।

परन्तु दुसरी वांस्तविक्ता तो यह है कि परमेश्वर ने अपने बारे में, अपनी इच्छाओं के बारे में कि वह मन्नुष्य से क्या चाहता है, उसने अपनी पुस्तक बाईबिल में बहुत ही अच्छी प्रका से व्याख्या की है, और यदि मनुष्य बाईबिल को न पढ़ और उसकी ईच्छाओं के बारे में ने जाने तो परमेश्वर इससे खुश नहीं होता है, परन्तु यदि हम उसके बारे में विधिपूर्वक न जाने तो यह उसी प्रकार से खतरनाक भी तो सकता है, जैसा कि अज्ञातं डॉक्टर से मरीज तो, अरु अज्ञांत हवाई चालक (पाईलट) से यात्री गण तो।

यदि हम उसकी ईच्छाओं को ठुकरायें तो यह सही होगां? यदु हम परमेश्वर की ईच्छाओं तो ठुकरा दें तो, यज अच्छा न होगां, और उससे परमेश्वर भि पसन्न नहीं होगां, क्योंकि परमेश्वर हम लोगों से बहुत ही प्रकन्न होता है, जब स्वतंत्र रुप से लोग स्वतन्त्रा का दुरूपयोग करते है, और लोग उस प्रकार से उसकी अराधना करते है, जैसा वोह चाहते है,

जैसा कि उनकी ईच्छाओं और उनके मन को अच्छा दिखता है। उस प्रकार से लोग परमेश्वर की अराधना करते है, परन्तु वोह परमेश्वर की ईच्छानुसार अराधना करना पसन्द नहीं करते, क्योंकि यह उउअके मन को नहीं भाता है।

पुराने समय में, परमेश्चर में विश्वास रखने वाले जन, जो भी परमेश्वर में उनका विश्वास होता था, वोह उस विश्वास में बहुत ही पक्के होते थे, और वोह अपने इस परमेश्वर के विश्वास के बारे में किसी से भी बोलने को निर्भीक रूप से तैय्यार रहते थे, और वोह किसी से भी अपने विश्वास के बारे में बगैर किसी हिच्चकिच्चाहट से बोलते थे।

परन्तु आज के इस वर्तमान समय में बहुत हिचकिच्चाहट होती है, वे अपने परमेश्वर के भाव को निर्भिक रूप से बोलने में स्वतंत्रा नहीं महसूस करते है, क्यो वे एक दूसरे के विश्वास और उनके विचार भावों से समझौता करते है, जो सही नहीं है, उनका विचार यह है कि हम कुछ भी विश्वास करें, इसका कोई भी अर्थ नहीं है, क्योंकि परमेश्वर एक है, और यदि हम नौतिक्ता पूर्वक जीवन व्यतीत करे तो, बस परमेश्वर के लिए इतना प्रर्याप्त है, परन्तु यह सत्य नहीं, वास्तविक्ता तो यह है कि हमारा परमेश्वर के बारे में और बाईबिल के बारे में विश्वास नियमानुसार होना चाहिए, बाईबिल परमेश्वर में विश्वास और उसकी इच्छाओ के बारे में इस प्रकार दर्शाती है, “और विश्वास बिना उसे प्रसन्न करना अनहोना है, क्योंकि परमेश्वर के पास आने वाले को विश्वास करना चाहिए, कि वह है, और वह अपने खोजने वालों को प्रतिफल देता है।" (इब्रानियों 11:6) यहाँ पर बाईबिल हम लोगों को यह भलिभातिँ समझा तही है कि बगैर पक्के विश्वास के हम लोगों को परमेश्वर को प्रसन्न करना असम्भव है, क्योंकि परमेश्वर कक्के विश्वासी, उसके सत्य की तलाश करने वालो से बहुत प्रसन्न होता है, यह हम लोगों का महान कर्तब्य है कि हम उसके सत्य की तलश करें, और उसके बताऐं हुए रास्ते पर चलें, और उसकी सच्चे मन से अराधना करें तो परमेश्वर इससे बहुत प्रसन्न होता है, और उपरोक्त बाईबिल उल्लेख से यह भी साफ जाहिर है कि परमेश्वर स्वतन्त्र रुप से उसको जानने से बहुत ही प्रसन्न होता है।

## परमेश्वर किस प्रकार से हमारे विश्वास और अराधना को स्वीकार करता है?

What about tolerance?

परमेश्वर सब्का न्याय अवश्य करेगां परन्तु ह यहाँ पर यह भुल जाते है कि परमेश्वर का न्याय, इस प्रकार नहीं होगां, जिस प्रकार से कि हम लोग चाहते है, परन्तु परमेश्वर सब

का न्याय अपने विवेक के अनुसार करेगां, और वह न्याय करते समय यह अवश्य देखेगां कि कौन से लोग ऐसे हैं जिन्होने उसके ईच्छा की पूर्ति कि है, और परमेश्वर को उस प्रकार से विश्वास किया, जिस प्रकार से वोह लोगों से विश्वास की ईच्छा करता था, परन्तु यह नहीं कि लोगों ने अपनी ईच्छानुसार जिस प्रकार से विश्वास करना चाहा उसको विश्वास किया, बहुत से लोगों का यह विचार है कि, हम बहुत दानी है, और हम बहुत ही नैतिकता का जीवन निर्वाह करते है, और भलाई के बहुत से कार्य करते है, इसलिए परमेश्वर हमारे से बहुत प्रसन्न होगां, और परमेश्वर हमारे को न्याय के दिन में हमारे को बहुत सम्मानित करेगां, परन्तु सत्य यह नहीं है, सत्य तो यह है कि उद्धार मात्र परमेश्वर के अनुग्रह द्वारा ही सम्भव है, हमारे अच्छे कार्यो द्वारा, उद्धार सम्भव नहीं है, परमेश्वर हम लोगो से यह आशा करता है कि, हम लोग परमेश्वर को उस प्रकार विश्वास करें, जिस प्रकार वह हम लोगों से विश्वास की ईच्छा रखता है, तो यह अवश्य है कि न्याय के दिन वह यह अवश्य देखेगां कि कितबे लोगों ने उसके ऊपर उसकी ईच्छानुसार विश्वास किया, और उसकी ईच्छा की पूर्ति की, हमारे अच्छे कार्यो का प्रतिफल परमेश्वर हमें अवश्य देगा, परन्तु अच्छे कार्य हमारे उद्धार का कारण नहीं को सकती, हमारा उद्धार मात्र परमेश्वर में विश्वास उसकी ईच्छानुसार और उसके अनुग्रह द्वारा ही सम्भव है, पौलुस ने यहाँ इस बात को, इस प्रकार से समझांया कि परमेश्वर ने इब्राहीम को अपना मित्र बोलकर पुकारा, क्योंकि इब्राहीम ने वोह सभी कार्य किए, जो परमेश्वर ने इब्राहीम से करने के लिए कहाँ, इब्राहीम ने परमेश्वर पर पूर्ण विश्वास किया, और वोह सब प्रतिज्ञायों पुरी हुई जो परमेश्वर ने इब्राहीम से की थी, परमेश्वर इब्राहीम के कार्यो से नहीं, परन्तु उसके विश्वास के द्वारा प्रसन्न हुआ।

देखें यहाँ पर पौलुस, इब्राहीम के बारे में हम लोगों को क्या बता रहा है, “और न अविश्वासी होकर परमेश्वर की प्रतिज्ञा पर संदेह किया, पर विश्वास में दृढ़ होकर परमेश्वर की महिमा की; और निश्चय जाना कि जिस बात की उसने प्रतिज्ञा की है, वह उसे पूरा करने में भी समर्थ है। इस कारण यह उसके लिये धार्मिकता गिना गया। और यह वचन, "विश्वास उसके लिये धार्मिकता गिना गया," न केवल उसी के लिये लिखा गया, वरन् हमारे लिये भी जिनके लिये विश्वास धार्मिकता गिना जाएगा, अर्थात् हमारे लिये जो उस पर विश्वास करते हैं जिसने हमारे प्रभु यीशु को मरे हुओं में से जिलाया। वह हमारे अपराधों के लिये पकड़वाया गया, और हमारे धर्मी ठहरने के लिये जिलाया भी गया।" (रोमियों 4:20-25) और यहाँ पर पौलुस हम लोगों को यह भी बताना, चाहता है कि, जो विश्वास का कारण इब्राहीम के साथ था, वोह हम सब लोगों को भी सामान्य रूप से लागु होत है, और परमेश्वर के वचन में भी विश्वास करना, हम लोगों के उद्धार के लिए

आवश्यक है, हम यहाँ पर यह देखेंगें कि सन्त पतरस क्या लिखता है, “क्योंकि तुम ने नाशमान नहीं पर अविनाशी बीज से परमेश्वर के जीवते और सदा ठहरने वाले वचन के द्वारा नया जन्म पाया है।" और यही कारण है कि नये मियम में विश्वास को विशेष महत्व दिया गया है, पतरस के समान और बहुत से उल्लेख, हम बाईबिल में कई अन्य स्थानों में भी पायेगें।

“वह अपने घर आया और उसके अपनों ने उसे ग्रहण नहीं किया। परन्तु जितनों ने उसे ग्रहण किया, उसने उन्हें परमेश्वर की सन्तान होने का अधिकार दिया, अर्थात् उन्हें जो उसके नाम पर विश्वास रखते हैं।" (यूहन्ना 1:11-12)

“और विश्वास बिना उसे प्रसन्न करना अनहोना है; क्योंकि परमेश्वर के पास आनेवाले को विश्वास करना चाहिए कि वह है, और अपने खोजनेवालों को प्रतिफल देता है।” (इब्रानियों 11:6)

“और उसने उनसे कहा, "तुम सारे जगत में जाकर सारी सृष्टि के लोगों को सुसमाचार प्रचार करो। जो विश्वास करे और बपतिस्मा ले उसी का उद्धार होगा, परन्तु जो विश्वास न करेगा वह दोषी ठहराया जाएगा।” (मरकुस 16:15-16)

## विश्वास या अन्ध विश्वास

Faith or Superstition

विश्वास जो वास्तव में विश्वास के योग्य है, उसी पर विश्वास करना चाहिए, हमको किसी भी प्रका का विश्वास करने के पहले उसका तर्क पूर्वक अध्य्यन करना बहुत ही आवश्यक हैं, देखिए एक स्थान पर बाईबिल इसके बारे में क्या कहती है, “क्योंकि जैसा वह अपने मन में विचार करता है, वैसा वह आप है, वह तुझ से कहता तो है, खा पी, परन्तु उसका मन तुझ से लगा नहीं।" (नीतिवचन 23:7)

यहाँ पर हमको यह देखने को मिलता है कि जो वह मुहँ से कहता है, वह सही नहीं है, क्योंकि उसका दिल में विश्वास कुछ और ही है, और वह मात्र ऊपर से दिखाने के लिए कहता, नये नियम का लिखक यहाँ पर इस बात को बहुत सुन्दर रुप में इस प्रकार से प्रगट किया है, “परन्तु यदि हम या स्वर्ग से कोई दूत भी उस सुसमाचार को छोड़ जो हम ने तुम को सुनाया है, कोई और सुसमाचार तुम्हें सुनाए, तो स्त्रामित हो। जैसा हम पहिले कह चुके हैं, वैसा ही मैं अब फिर कहता हूं, कि उस सुसमाचार को छोड़ जिसे तुम ने

ग्रहण किया है, यदि कोई और सुसमाचार सुनाता है, तो स्त्रापित हो। अब मैं क्या मनुष्यों को मानता हूं या परमेश्वर को? क्या मैं मनुष्यों को प्रसन्न करना चाहता हूं?" (गलतियों 1:8-9) यह बात सुलैमान ने अपनी वचन में कहाँ, परन्तु पौलुस ने उपरोक्त शब्द में जो विश्वास के बारे में बताया वह बहुत ही स्पष्ट रूप से है, और बहुत ही अच्छे तरीके से समझाया है, पौलुस ने यहाँ स्पष्ट रूप से बताया कि, वह जिस बात का प्रचार कर रहा है, वह वास्तव में परमेश्वर का वचन है और गिरजा घर वास्तव में परमेश्वर के वचन की सच्चाई पर स्थापित होना चाहिए न कि अपने और अपने पूर्वजो द्वारा की गयी व्याख्यान पर, परमेश्वर का अराधनालय स्थल, परमेश्वर के वचन की सच्चाई पर आधारित होना चाहिए, इसके बारे में पौलुस ने अपनी लेखिका में बहुत ही स्पष्ट रुप से व्याख्या की है, जो इस प्रकार है, "कि यदि मेरे आने में देर हो तो तू जान ले, कि परमेश्वर का घर जो जीवते परमेश्वर की कलीसिया है, और जो सत्य का खम्भा और निव है उसमें कैसा बर्ताव करना चाहिए।" (1 तीमुथियुस 3:15) यह हम लोगों का कर्तब्य कोता है कि हम लोग यह सुनिश्चित कर ले कि परमेश्वर का अराधना स्थल सच्चाई पर, और परमेश्वर के वचन पर आधारित होना चाहिए, जब यीशु सामती औरर से सच्चे धर्म के बारे में बता रहा था, तो उसने यह अचम्भित शब्द कहे, "परन्तु वह समय आयेगां, वरन अब भी है, जिसमें सच्चे भक्त पिता, परमेश्वर का भजन आत्मा और सच्चाई से करेगें, क्योंकि पिता अपने लिए ऐसे जी भजन करने वालों को ढुंढता है।" (यूहन्ना 4:23) यीशु जो यहाँ पर परमेश्वर के भजन करने वालो के बारे में बोलता है, यहाँ पर उसका अर्थ किसी धर्म से नहीं है, परन्तु परमेश्वर के लिये गये वचन से है, यीशु हम लोगो को यह बताना चाहता है कि, जो लोग परमेश्वर के सच्चे वचन पर चलते, और उसका पालन करते, और जो उसकी सच्चे दिल से अराधना करते, परमेश्वर हमेशा उनके साथ रहता है, और परमेश्वर हमेशा सच्चे दिल से अराधना करने वालो से बहुत प्रसन्न होता है, यह हम लोगों का कर्तव्य होता है कि, हम लोग परमेश्वर के वचन को जाने, उसकी सच्चाईयों को जाने और बहुत ही नम्रता पूर्वक, उसकी अराधना करें, अब हम निम्न लिखित वाक्यों में देखेगें कि यीशु हमको परमेश्वर और उसकी अराधना के बारे में यहाँ क्या कहता है, "परमेश्वर आत्मा है, और अवश्य है कि उसकी अराधना करने वाले आत्मा और सच्चाई से अरादन करें।" (यूहन्ना 4:24)

# क्या यह जीवन और मृत्यु का प्रश्न है?

## A matter of life and death?

अब यहाँ पर एक महत्वपूर्ण प्रश्न यह उत्पन्न होता है, क्या यह जीवन या मृत्यु का प्रश्न है, यह कोई शार्मिक और सामाजिक प्रश्न न होकर, हमारे उद्धार और जीवन का प्रश्न है, प्रारम्भ से ही परमेश्वर उन लोगों से कभी भी प्रश्न न था, जो लोग उसकी आज्ञाओं पर न चले, अतवाजि लोगों ने सच्चे दिल से उसकी अराधना न कि, यहाँ पर हम परमेश्वर के वचन में से, देखें तो उस प्रकार पायेगें, “तब नादाब और अबीहू नामक हारून के दो पुत्रों ने अपना अपना धूपदान लिया, और उन में आग भरी, और उस में धूप डालकर उस ऊपरी आग की जिसकी आज्ञा यहोवा ने नहीं दी थी यहोवा के सम्मुख आरती दी। तब यहोवा के सम्मुख से आग निकलकर उन दोनों को भस्म कर दिया, और वे यहोवा के साम्हने मर गए। तब मूसा ने हारून से कहा, यह वही बात है जिसे यहोवा ने कहा था, कि जो मेरे समीप आए अवश्य है कि वह मुझे पवित्र जाने, और सारी जनता के साम्हने मेरी महिमा करे। और हारून चुप रहा।" (लऐव्याव्यवस्था 10:1-3) यहाँ पर हम देखते है कि, परमेश्वर ने उन लोगों को भस्म कर दिया, जिन लोगों ने परमेश्वर की आज्ञा का उल्लघन किया, और परमेश्वर ने उन लोगों को खत्म कर दिया, जिन्होने उसकी अराधना सच्चे दिल से नहीं कि, तो हम यहाँ पर यह देखते है कि जिन लोगों ने उसकी आज्ञां में कुछ फेर बदल किया यह किसी कारण वश, किसी प्रथा के प्रचलन को परमेश्वर की आज्ञां में शामिल किया, परमेश्वर उनसे प्रसन्न नहीं हुआ, देखिंए यहाँ पर परमेश्वर ने अपने बारे में मूसा से क्या कहा, "तब मूसा ने हारून से कहा, यह वही बात है जिसे यहोवा ने कहा था, कि जो मेरे समीप आए अवश्य है कि वह मुझे पवित्र जाने, और सारी जनता के सामने मेरी महिमा करे, और हारून चुप रहा" तो हम यहाँ पर यह देखते है कि परमेश्वर मात्र उन लोगों से ही प्रसन्न होता है, जो सच्चे दिल से उसके पास आते है, परमेश्वर कपट दिल वालों को पसन्द नहीं करता, परमेश्वर उन लोगों को भी पसन्द नहीं करता, जो परमेश्वर की अराधना में रुढ़वादिता का विचार रखते है, परन्तु परमेश्वर हम लोगों से यह आशा करता है कि लोगुनके दिये गये वचन का अध्य्यन करें, और सच्चाई की तलाश करें और सच्चाई पर चलकर परमेश्वर की सच्चे दिल से अराधना करें, प्रयायः ऐसा भी देखा जाता है कि, बहुत से लोग स्वंय सच्चाई को नहीं जानते, परन्तु वोह सच्चाई का प्रचार दुसरे तक करते है।

# सत्यता की परख (जाँच)

## The test of truth

यह बोलना उचित न होगां कि, हमको जिस प्रकार की शिक्षा प्राप्त हुई है, मैं उसी शिक्षा पर चल रहा हूँ, परमेश्वर के न्यायलय में, अपने आप को बचाने का यह प्रर्याप्त कारण न होगां। देखें परमेश्वर का वचन हमें यहाँ क्या बता रहा है, “उन को जाने दो, वे अन्धे मार्ग दिखाने वाले है, और अन्धा यदि अन्धे को मार्ग दिखाए, तो दोनो गड़हे में गिर पड़ेगे।" (मत्ती 15:14)

और यह भी बोलना उचित न होगां कि हमारे को बहुत ही बुद्धिमान और चालाक आदमी ने मुझे धार्मिक शिक्षा दी है, क्योंकि हमारी धार्मिक शिक्षा सत्य पर अधारित होना चाहिए, परमेश्वर के वचन को जानने के लिए, परमेश्वर के वचन की बुद्धिमता की आवश्यकता है, न कि, मनुष्य के ज्ञांन के बुद्धिमाता की आवश्यकता, और यीशु ने इस सम्बन्ध में पुराने नियम से एक बहुत ही अच्छा सा उल्लेख भी किया है, “और ये व्यर्थ मेरी उपासना करते है, क्योंकि मनुष्यों की विधियों को धर्मोपदेश कर के सिखाते है।" (मत्ती 15:9)

“और प्रभु ने कहा, ये लोग जो मुहँ से मेरा आदर करते हुए समीप आते परन्तु अपना मन मुझ से दूर रखते है, और जो केवल मनुष्यों की आज्ञां सुन-सुन कर मेरा भय मानते है।" (यशायाह 29:13) यहाँ पर हम यह देखते है कि परमेश्वर उन लोगो से बहुत प्रसन्न होता है, जो निर्भिकता पूर्वक उसकी अराधना करते है, परन्तु परमेश्वर मनुष्य द्वारा बनाई गयी, विधियों की प्रार्थना से कभी भी नहीं प्रसन्न होता है। हम लोगों को इस वर्तमान समय में मनुष्यों के सिद्धान्त पर आधारित गिरजाघरो में विश्वास नहीं करना चाहिए, क्योंकि यह बड़े-बड़े अराधनालय स्थल, मनुष्यों के सिद्धान्त पर आधारित है, जहाँ पर उसकी (परमेश्वर) की प्रार्थना, वास्तविक्ता से बहुत परे है। बाईबिल हम लोगों यह कहीं भी नहीं बताती है कि यदि कोई मनुष्य बहुत शिक्षित ज्ञांनी या बहुत बड़ा विचारक है, तो उसे परमेश्वर के राज्य में प्रवेश अवश्य मिलेगां, परन्तु परमेश्वर के राज्य का अधिकारी होने के लिए, हमको बहुत ही नम्रता पूर्वक, उसकी शिक्षाओं को ग्रहण करना चाहिए, और उसकी अराधना में नम्रता पूर्वक तल्लीन रहना चाहिए।

# बाईबिल की शिक्षाऐं

## Bible teaching

बाईबिल की समस्त शिक्षाऐं मात्र वास्तविक्ता पर अधारित है, अगर बाईबिल की वास्तविक्ता और सच्चाईयों पर ध्यान न दिया गया तो समस्त बाईबिल का भाव व अर्थ ही बदल जायेगां, उदाहरण स्वरुप हम यदि यीशु के जन्म के बारे में, परमेश्वर की योजना और पवित्र आत्मा का योगदान न माने तो यीशु परमेश्वरयी पुत्र न होकर, युसुफ का पुत्र हो जायेगां, बस यीशु भी मात्र एक समान्य जन के समान्य हो जायेगां,और उसी प्रकार यदि हमारा विश्वास यीशु की शारीरीक रुप से पुर्नत्थान में न हो, तो वोह भी मात्र एक समान्य जन के समान्य मरा हुआ है, परन्तु ऐसा नहीं है, यीशु मरने के बाद, पुनः तीन दिन बाद शारीरीख रुप से जिवति हुआ, तो हम यहाँ पर यह देखते है कि, बाईबिल की समस्त धारणा, मात्र वास्तविक विश्वास न करें, तो हमारा यह विश्वास भी व्यर्थ हो जायेगां कि यीशु परमेश्वर का पुत्र था, इसलिए हम लोगों का यह कर्तव्य होता है कि, हम लो बाईबिल का सुचारु से स्वंय अध्य्यन करें, और जाने की बाईबिल हम लोगों को क्या सिखाती है। हम लोगों के लिए यह अच्छा न होगां कि, हम बाईबिल का अध्य्यन उन लोगों से करें, जिन्हे स्वंय बाईबिल का सुचारू रूप से अध्य्यन न हो।

नये नियम का सिद्धान्त और उसकी शिक्षाऐं अलग-अलग चर्चो के लिए, अलग-अलग नहीं हो सकती, परन्तु सत्य तो यह है कि नये नियम का सिद्धान्त, परमेश्वर का वचन समस्त जन, और कलीसिया के लिए एक ही है, और हम सब लोगो का यह कार्य होता है कि हम लोग, परमेश्वर के बनाए हुए सिद्धान्त पर चले, न कि मनुष्य के बनाऐ हुए सिद्धान्त पर, इस बात को और भलि-भातिँ हम पौलुस के इस अनुच्छेद के द्वारा समझ सकते है।

“मुझे आश्चर्य होता है, कि जिस ने तुम्हे मसीह के अनुग्रह से बुलाया उस से तुम इतनी जल्दी फिर कर और ही प्रकार के सुसमाचार की ओर झुकने लगे।" (गलातियों 1:6)

उपरोक्त अनुच्छेद में पौलुस ने यह स्पष्ट कर दिया कि यीशु का शुभ समाचार मात्र एक ही है, जिसका मैं प्रचार कर रहा हूँ, और पौलुस ने उन लोगों पर बड़ा आश्चर्य व्यक्त किया जिन्होने एक बार तो यीशु के शुभ समाचार को तो ग्रहण किया, परन्तु बाद में वे किसी और विश्वास की तरफ झुकने लगे, जो यीशु द्वारा प्रचारित नहीं था, तो यहाँ पर यह बात स्पष्ट रूप से समझ में आ जाती है कि हम लोगों को किसी भी जन या किसी भि जन (चहे वह कितना महान क्यों न हो) उसके सन्देश पर विश्वास नहीं करना चाहिए, यदि वह यीशु के शुभ समाचार से हट के है तो, क्योंकि परमेश्वर का वचन ही हमारे मार्ग

दर्शक के लिए प्रर्याप्त है, और हमें किसी और के मार्ग दर्शक की आवश्यकता नहीं है, पुराने नियम में उसको बहुत ही उचित तरीके से उस प्रकार दर्शाया गया है। "परमेश्वर की यह वाणी है, ये सब वस्तुए मेरे ही हाथ की बनाई हुई है, सो ये सब मेरी ही है परन्तु मैं उसी की ओर दृष्टि करूगां जो दीन और खेदित मन का हो, और मेरा वचन सुनकर थरथराता है।" (यशायाह 66:2) उपरोक्त पुराने नियम को पढ़ने से यह ज्ञांत हो जाता है कि, सभी वस्तुएँ परमेश्वर की है, सम्पूर्ण संसार, और संसार की सम्पूर्ण वस्तुएँ भी परमेश्वर की है, और परमेश्वर की है, और परमेश्वर उन लोगों से बहुत प्रसन्न होता है, जो उसके वचन का पालन बहुत ही भय के साथ करते है, और जो परमेश्वर और उसके वचन से थरथराते है, परन्तु यहाँ पर हम लोगों का यहकर्तव्य होता है कि हम मालुम करें कि, परमेश्वर क्या, उसका वचन क्या है, और उसके वचन का वास्तविक अर्थ क्या है? यह हमारा कर्तव्य होता है कि हम सत्य की तलाश करें, और सत्यता पर चलें।

## जीवन को बचाने वाली धार्मिक शिक्षा

Life-saving doctrines to be discovered

हम लोग जब अपने पूर्वजो द्वारा दी गयी, धार्मिक शिक्षाओं से हटकर हम स्वतः बाईबिल की शिक्षाओं को ग्रहन पूर्वक अध्य्यन करें तो हमें बहुत सारी नई बातों का पता चलेगां, और हम यह जानेगें कि वास्तव में सत्य कुछ और ही, जैसे परमेश्वर का राज्य, यीशु परमेश्वर का पुत्र, इन सभी विश्वास के बारे में हम बहुत अन्तर पायेगें, इस पुस्तक के लेखक को स्वंय इस बातों का अनुभव हुआ है, इस पुस्तक के लेखक का जो अपने पूर्वजो द्वारा बाईबिल (परमेश्वर के वचन), के बारे में अन्ध विश्वास था, परन्तु बाईबिल का स्वंय अध्य्यन गहनता के साथ करने से उसको सब में काफी अन्तर दिखा, जैसे परमेश्वर का राज्य पृथ्वी पर स्थापित होगां, और इसकी राजधानी येरुशलेम होगीं, और उसका राजा यीशु होगां, और यीशु मुद्रों को जिन्दा करेगां और न्याय करेगां, मृत्यु के बाद मनुष्य मानो हमेशा के लिए सो जाता है, बपतिस्माँ माने यीशु में एक नये जन्म पाने के समान है, बपतिस्में के बाद हमारा पुराना आचरण जाता रहता है, और नया आचरण आता है, जो हमें यीशु की शिक्षा से प्राप्त होता ह। हम लोगों के बपतिस्मा प्राप्त करने के बाद, परमेश्वर के वचन के बताऐ हुए रास्ते पर चलना चाहिये, देखिए यहाँ पर नया नियम का एक अनुच्छेद इस बारे में क्या दर्शाता है, “तब पतरस और प्रेरितों ने उत्तर दिया, कि मनुष्यों की आज्ञां से बढ़कर परमेश्वर की आज्ञां का पालन करना ही कर्तव्य (कर्म) है।"

तो यहाँ पर नये नियम का लेखक स्पष्ट रुप से यह बता दिया कि, जो भी जन परमेश्वर की आज्ञां, अन्य किसी भी आज्ञां से बढ़कर और भय से मनेगां, परमेश्वर उससे बहुत ही प्रसन्न होता है। और हम लोगो का यह प्रथम कर्तव्य होता है कि हम सत्य को जाने-समझे और सत्य को जानकर, सत्य पर चलने के प्रयत्न कर, और बगैर किसी भय के हम परमेश्वर के राज्य का प्रचार करे।

## विश्वास पर स्थिरता के सम्बन्ध में नये नियम में से कुछ प्रमुख अनुच्छेद

Three examples of living faith

"वह भक्त था, और अपने सारे घराने समेत परमेश्वर से डरता था, और यहूदी लागों को बहुत दान देता, और बराबर परमेश्वर से प्रार्थना करता था। ... और उसने आज्ञा दी कि उन्हें यीशु मसीह के नाम में बपतिस्मा दिया जाए। तब उन्होंने उससे विनती की कि वह कुछ दिन और उनके साथ रहे।" (प्रेरितों के काम 10:2,48)

"अपुल्लोस नामक एक यहूदी, जिसका जन्म सिकन्दरिया में हुआ था, जो विद्वान पुरूष था और पवित्रशास्त्रा को अच्छी तरह से जानता था, इफिसुस में आया। उसने प्रभु के मार्ग की शिक्षा पाई थी, और मन लगाकर यीशु के विषय ठीक ठीक सुनाता, और सिखाता था, परन्तु वह केवल यूहन्ना के बपतिस्मा की बात जानता था। वह आराधनालय में निडर होकर बोलने लगा, पर प्रिस्किल्ला और अक्विला उसकी बातें सुनकर उसे अपने यहाँ ले गए और परमेश्वर का मार्ग उसको और भी ठीक ठीक बताया।" (प्रेरितों के काम 18:24-26)

हमें यह जानना बहुत ही आवश्यक है कि हमारे मात्र धर्मिक कार्य, कल्याणं दान दक्षिण ही प्रर्याप्त नहीं है, परन्तु हमें परमेश्वर के वचन पर चलना, और यह जानना की वचन की सत्यता और उसका अर्थ क्या है और सत्य को जानकर उसका पालन करना और उस अपनाना, परमेश्वर के वचन को ग्रहण कर के, बपतिस्मा प्राप्त करना, बपतिस्में के पहले, बपतिस्में का पुरा अर्थ समझना, और बपतिस्मा प्राप्त करने के बाद नौतिक जीवन की अचांर संहिता पर चलना, अपने पुराने विचार को छोड़ कर यीशु में नया धार्मिक जीवन व्यतीत करना, धार्मिक लोगों की सजंती में रहना इत्यादि बहुत ही आवश्यक है, और यह जभी सम्भव हो सकता है, जब मनुष्य सत्यता की जाचँ-छान बीन करके सत्यता पर चले।

## निर्ष्कष

Conclusion

हम यहाँ पर तीन प्रका के मनुष्यों को पाते है, एक ऐसा धार्मिक जन जो प्रतिदिन प्रार्थना करता और बहुत ही सद्भावना का जीवन व्यतीत करता, और उसमें वफादारी कुट-कुट कर भरी हुई है, और एक दूसरा जन जो बाईबिल प्रति दिन पढ़ता, और बहुत ही धार्मिकता का जीवन व्यतीत करता है, और एक ऐसा तीसरा जन जो घुम-घुम कर अनेक स्थानों में जाकर यीशु का प्रचार करता है, और परमेश्वर का वचन अराधना स्थल में जाकर निभिर्कता के साथ सुनाता, परन्तु वास्तविकता तो यह है कि उन तीन जनो को भी परमेश्वर का वचन वास्तविक रुप से जानने की आवश्यकता है, और सब को परमेश्वर का वचन, और उसके अनुग्रह और उद्धार की आवश्यकता है, हम लोगों को ऐसे विश्वास की आवश्यकता है, जो परमेश्वर के वचन पर आधारित हो न कि मनुष्यों के सिद्धान्त और उनके रीति रिवाजों पर आधारित जो, हमारे को ऐसे विश्वास की आवश्यकता है, जो हमें उद्धार का मार्ग दिला सके, और हमारे को परमेश्वर के राज्य में प्रवेश दिला सके, और अन्नत जीवन का मार्ग प्रशस्त कर सके। उद्धार मारे वास्तविक विश्वास से ही प्राप्त को सकता है।

## क्या हम किसी भी अराधना स्थल (गिरज घर) को जा सकते है?

Does it matter which church I belong to?

जैसा कि हम लोग इस पुस्तक के आरम्भ से ही बताते और समझाते आ रहे है कि, कोई भी यदि किसी भी अराधनालय स्थल को जाना चाहे तो जा सकता है, परन्तु यदि उसका तार्त्पय अन्नत कालीन जीवन, उद्धार, और परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करने से है, तो वह मात्र उसी अराधनालय स्थल गीरजा घर को जाना पसन्द करेगां, जो गिरजा घर परमेश्वर के वचन पर अधारित हो, और जो सत्यता पर विश्वास करती है, और परमेश्वर के बताए हुए मार्ग पर चलती हो, और अराधना का तरीका इस प्रका हो, जो परमेश्वर को भातां हो।

द्वारा प्रकाशित और मुद्रित।

Note from the publisher

अगर इस पुस्तक के अन्त में कोई और पता नहीं दिया गया है, तो आप उपरोक्त दिये गये पते पर, इस पुस्तक से सम्बन्धित किसी भि प्रकार की पूछताझ कर सकते है।

प्रकाशक की टिप्पनी: इस पुस्तक के लिखक डेन्निस गिल्लेट, का जन्म एक रोमन कैथोलिक परिवार में हुआ, और धार्मिक शिक्षा हेतु बाईबिल विद्यालय गये, और इस प्रकार उन्होने बाईबिल का अध्य्यन प्रारम्भ किया, उनके मनुष्तिक में तरह-तरह के प्रश्न उत्पन्न हुआ, तब उन्होने बाईबिल का अध्य्यन स्वतन्त्र रुप से स्वत: आरम्भ किया इस प्रकार उन्होने परमेश्वर, और यीशु के शुभ समाचार को भलि-भातिं समझां। अभी आप यीशु मसीह के दोबारा वापिस आने की आशा में सो रहे हैं (देहान्त हो गया)।

*क्या यह सम्भव है, सब का विश्वास एक ही जैसा है, और मात्र धर्मो के नाम अलग-अलग है? धर्म अनेक है, परन्तु बाईबिल मात्र एक है।*


क्रिस्टेडेलफियन
पो. ओ. बाक्स. - 10
मुजफ्फरनगर, 251002, उत्तर प्रदेश

The Christadelphians
P.O. Box 10,
Muzaffarnagar 251002, U.P.